भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 03 | उदयपुर सोमवार 15 फरवरी 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लोकदेव मांगटजी मोठी

-सुरेन्द्र अंचल-

जोग-संजोग ऐसा बना कि ज्योंही मांगटजी का वहां पहुंचना हुआ त्योंही बकरी का छींकना हुआ। छींक के मारे मांगटजी के पहने कपड़े छींटा लगने से खराब होगये। इस पर उन्हें रीस आई तो ऐसी कि तलवार से बकरी पर ऐसा झटका मारा कि उसके दो टुकड़े हो गये। जोगीसर अपनी आंतड़ियां निकाल धो रहे थे और धोने के बाद उन्हें निगल पेट में यथास्थान रखदी। जोगीसर की करामात से बकरी मैं....मैं.... करती चरने लगी।

आधी रात भोपे के शरीर में देवता का पदार्पण, कूदते हुए अदृश्य होना, घण्टे भर पश्चात लम्बी दूरी तय कर पुनः दूसरे दरवाजे से प्रकट होना, पुनः वहां से उड़ कालादेह के पास एक पत्ती खाखरा वृक्ष तक जाना-लौटना मेलार्थियों को चकित किये रहता है। ढाक के तीन पात होते हैं किन्तु स्वयं मांगटजी द्वारा लगाया यह ढाक वृक्ष मात्र एक पत्ती का होने से इसे एक पन्नी खांखरा कहा जाता है।

मेवाड़ के गोरमघाट-खामलीघाट के पहाड़ी घाटे में रावत समाज के लोकदेवता मांगटजी मोठी का परचा बड़ी मान्यता लिए है। मांगटजी मोठी वंश में सिद्धनाथ हुए। प्रसिद्धि है कि इनका भोपा वहां उपस्थित जातरियों के सम्मुख साठ-सित्तर मील की उड़ान भर पुनः घण्टे भर में लौट आता है। यह स्थल पहाड़ की एक ऊंची चोटी पर स्थित 'मांगटजी का मथारा' नाम से जाना जाता है जो टाटगढ़ से सात तथा जस्साखेड़ा से पन्द्रह किलोमीटर की दूरी लिए है।

मांगटजी का जन्म नाम मालदेव था। मांगटजी घरेलू नाम था। रावली के सातूखेड़ा गांव में संवत् 1428 के करीब ठाकुर सातूजी हुए। गुजरों के देवता देवनारायण और सातूजी समकालीन राखीडोरे के मासियात भाई थे। रावलजी इनके गुरु थे जिनसे इन्होंने सौलह विद्या पाई। सौलहवीं उड़न विद्या थी। आसाढ़ सुद नम मांगटजी की सेवा-पूजा का खास दिन होने से यह 'मांगटजी की नम' नाम से सुज्ञात है।

देवनारायण की माता साढू और ठाकुर सातूजी की ठुकरानी एकबार पोखर तीर्थ गई जहां दोनों कांचली बदल बहिनें बनीं। एक समय देवनारायण गोठां से अपने मौसा, मासी और भाई मिलने सातूखेड़ा आये। उनके पास बीजळ नामक बड़ा चमत्कारी उड़न घोड़ा था।

उन्होंने मांगटजी को घोड़े को पानी पा लाने को कहा। यह भळावण देते कि इस पर सवारी मत करना और बड़ी सावधानी रखना। मांगटजी उसे पास की नदी पर लेगये। रास्ते में उन्हें विचार आया कि ऐसा कैसा घोड़ा है जिस पर बैठने के लिए मना कर दिया और जिस पर मैं काबू नहीं पा सकूं।

यह सोच मांगटजी उस घोड़े पर चढ़ बैठे। उनके सवार होते ही घोड़े ने चील की तरह उड़ान भरी जिससे वे काबू नहीं पा सके। बड़ी तेज रफ्तार भर उसने एक पहाड़ी पर अपने खुर रोपे। वही स्थल मांगटजी का मथारा कहलाया। वहीं मन्दिर बना और बड़ा भारी मेला भरना शुरू हुआ। यह आसाढ़ की नमी का ही दिन था।

घोड़ा ले मांगटजी देवजी के पास पहुंचे। दोनों को पसीने से तरबतर देख देवजी सब समझ गये। उन्होंने उपालंभ देते मांगटजी को कहा, यह तो ठीक रहा कि मेरे ना कहने पर भी तूने बीजळ की सवारी करली पर गिरा नहीं। यदि नीचे गिर जाता तो ढूंढ़े भी तेरी हड्डी का पता नहीं लगता। मांगटजी घबराते हुए बोले, मेरी क्या औकात जो इस देववर्णी घोड़े की सवारी करूं। यह तो मुझे उड़ाकर लेगया।

देवजी नाराज हुए। इस प्रकार मांगटजी ने सौलहवीं उड़ान विद्या पाने की पवित्रता खो दी। वे बहुत गिड़गिड़ाये मगर एक न चली। उसी समय देवजी ने ध्यान लगाकर देखा। मांगटजी से कहा, कुछ दिनों बाद इसी जगह सिद्ध जोगीसर थान रावळ आकर धूणी रमायेंगे। तू उनकी सेवा कर उपदेश ग्रहण करना। वे तुझ पर मेहरबान हो उड़न विद्या के योग्य घोषित कर देंगे।

कहा जाता है कि मेवाड़ महाराणा रायमल के काका-बाबा में कुणई भाई गोरखपंथी गुरु से उपदेश ले जोगी बन गये जो आगे जाकर थान रावळ कहलाये। ये ही रावळजी घोड़ावत रावतों के धर्मगुरु के रूप में पूजित हैं। इनका गुरुद्वारा आसन मिलोला गांव में है। थान रावळ किन्हीं कारणों से रूठकर उदयपुर की नारमगरा धूणी से अपने दण्डकमण्डल ले बळते-जळते अंगारे झोली में भर रावळी की बनी में जोगमण्डी धूणी धकाई जो आज भी सातूखेड़ा के पास अस्तित्व में है।

मांगटजी मोठी प्रतिमा

लोकदेवता मांगटजी मोठी मंदिर

मांगटजी को जब कुणई जोगीसर धूणी जलाने का पता चला तो वे नहा-धो स्वच्छ श्वेत धोती, अंगरखी पहन, तलवार बांध पहुंचे। उस समय रावळजी नितनेम हेतु नदी-स्नान गये हुए थे। वहां रावळजी की बकरी बंधी हुई थी। जोग-संजोग ऐसा बना कि ज्योंही मांगटजी का वहां पहुंचना हुआ त्योंही बकरी का छींकना हुआ। छींक के मारे मांगटजी के पहने कपड़े छींटा लगने से खराब होगये। इस पर उन्हें रीस आई तो ऐसी कि तलवार से बकरी पर ऐसा झटका मारा कि उसके दो टुकड़े हो गये।

बहुत देर होने पर भी जोगीसर आते नहीं दीखे तो मांगटजी ने नदी का रास्ता पकड़ा। वहां जाकर उन्होंने देखा कि जोगीसर अपनी आंतड़ियां निकाल धो रहे थे और धोने के बाद उन्हें निगल पेट में यथास्थान रखदी। उन्हें यह कौतुक देख क्षणभर तो विश्वास ही नहीं हुआ कि यह जोगीसर की ही करामात है।

धूणी पर रावळजी को आसीन देख मांगटजी पहुंचे और बोले, जाति का राजपूत और सातूखेड़ा का कुंवर होने से गुस्से में बकरी काटने का कुकर्म मुझसे हो गया सो क्षमा करें। इसकी एवज में मैं दूसरी बकरी लाकर आपकी शरण में हाजिर कर दूं। यह सुन रावळजी मुस्काये और बोले, बावले! कौन किस को मार सकता है। इसकी आयु शेष है। इसके दोनों हिस्से जोड़दे। मांगटजी ने आज्ञा शिरोधार्य की। बकरी मैं....मैं.... करती चरने लगी पर मांगटजी के कपड़ों पर लगे खून के छींटे जब वे झाटकने लगे कि तो गुलाल झड़ने लगी। मांगटजी ने रावळजी को गुरु थरपित किया। उपदेश सुना। फलतः उन्हें उड़न विद्या प्राप्त हुई।

एक दन्तकथा के अनुसार मांगटजी के काकाबाबा के भाई अम्बाजी बागड़ा ने एकबार सातूखेड़ा पर हमला बोल दिया। उनका सेवादार एक थोरी था जो सिद्ध तांत्रिक था। वह जान गया कि मांगटजी के पास देवनारायण से अनेक शक्तियां मिली हुई हैं। उन्हें नष्ट किये बिना सातूखेड़ा को जीतना सम्भव नहीं होगा। यह सोच थोरी एक दाड़म की डाल लाया। उसे पानी में भिगोई। अपने बायें पावं के अंगूठे से चीरा लगा खून डाल पर मसला और वह डाल मंत्रित कर मांगटजी की ओर फैंकी। यह देख मांगटजी उससे बचने खातिर सदेह बैकुण्ठ सिधार गये।

मांगटजी का मथारा स्थल पर बने मन्दिर पर आषाढ़ी नम को बड़ा भारी जागरण होकर मेला भरता है। आधी रात भोपे के शरीर में देवता का पदार्पण, कूदते हुए अदृश्य होना, घण्टे भर पश्चात लम्बी दूरी तय कर पुनः दूसरे दरवाजे से प्रकट होना, पुनः वहां से उड़ कालादेह के पास एक पत्ती खाखरा वृक्ष तक जाना-लौटना मेलार्थियों को चकित किये रहता है। ढाक के तीन पात होते हैं किन्तु स्वयं मांगटजी द्वारा लगाया यह ढाक वृक्ष मात्र एक पत्ती का होने से इसे एक पन्नी खांखरा कहा जाता है।

अचरज तो यह भी है कि इस देवस्थल के आसपास बसे गांवों में घासतेल का दीपक कोई नहीं जलाता। सभी मीठा तेल तिल्ली का दीपक जलाते हैं। यही नहीं, ब्याह के दिनों में महीने भर तक सम्बन्धित परिवार वाले खाट पर नहीं सोते हैं। सभी घरों के आंगन खुले होते हैं।

पोथीखाना

देव परंपराओं पर उल्लेखनीय कृति

'रवांई के देवालय एवं देवगाथाएं' हिमालय के उत्तरकाशी जनपद का महत्वपूर्ण पश्चिमोत्तर क्षेत्र है जिसमें स्थित मोरी, पुरोला तथा बाड़कोट नामक तहसीलें एवं मोरी, पुरोला और नौगांव विकासखण्ड हैं। इसी का रवांई भू-भाग प्राकृतिक सौंदर्य तथा उसकी खूबसूरत रमणीय समृद्धि के लिए विख्यात है।

इस पुस्तक में दिनेश रावत ने कुल पांच अध्यायों में इसका विशद वर्णन किया है। प्रथम खण्ड में उत्तरकाशी जनपद का ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिचय देते हुए रवांई अंचल के जीवनधर्मी पक्ष के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को उभारा है।

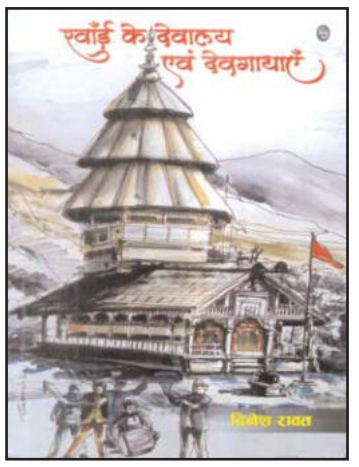

द्वितीय खण्ड में उस क्षेत्र के लोकजीवन तथा उसकी अटूट आस्था एवं अनघड़ विश्वास के प्रतीक लोकदेवता के परिप्रेक्ष्य में लोकास्थाजनित धार्मिक एवं आनुष्ठानिक लोकाचारों पर प्रकाश डालते तृतीय अध्याय में देवालयों से जुड़े विधि-विधानों, धार्मिक प्रवृत्तियों एवं आयामों पर सटीक जानकारी का रोचक वर्णन किया है।

पुस्तक का चौथा अध्याय सबसे बड़ा है जो तीन खण्डों में गुंफित है। खण्ड अ में नौगांव स्थित 22 देवालय-मन्दिरों से जुड़े देव-देवियों पर अच्छी जानकारी है। खण्ड ब में पुरोला तथा स में मोरी स्थित देवस्थानों तथा उनसे सम्बद्ध गाथाओं के बारे में पुख्ता विवरण दिया गया है। अन्तिम पंचम अध्याय में मध्यभारतकालीन परम्पराओं के बहाने विशिष्ट देवताओं, भूत-प्रेतों तथा अन्यान्य सरोकारों से जुड़ी मान्यताओं का मनभावन चित्रण किया है।

अपने अंचल की सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने का सुखद अहसास कराने वाले लेखक दिनेश रावत के सम्बन्ध में पुस्तक के प्राक्कथन में महाबीर रवांल्टा का यह कथन महत्वपूर्ण है-

हम अपने क्षेत्र के देवालयों के बारे में थोड़ा बहुत जानकारी से सर्वथा अनभिज्ञ होते हैं। ऐसे में दिनेश रावत का रवांई के अधिकाधिक देवालयों व उनसे जुड़ी देवगाथाओं को उजागर करने का प्रयास काफी रोचक एवं शोधपरक है।

अपने लोक के प्रति उनकी अन्वेषी व शोधपरक दृष्टि ने सामग्री को अधिक विश्वसनीय व प्रभावी बनाया है। देवगाथाएं निश्चित रूप से लोक से निकली हैं इसलिए लोक का प्रवाह व प्रभाव इनमें स्वत: ही देखने को मिलता है जो काफी हद तक रूचिकर, हृदयस्पर्शी तथा लुभाने व चौंकाने वाला भी है। लोक की व्यापकता इनमें बखूबी देखी जा सकती है।

यही नहीं, लेखक ने इसके माध्यम से हमें लोक के बहुत समीप ले जाने का जो प्रयास किया है उसमें वे काफी हद तक सफल नजर आते हैं। देवालयों से जुड़े इतिहास, पुराण व संस्कृति के साथ ही लोक की अद्भुत कल्पनाशक्ति, सामर्थ्य, जीवनशैली व शिल्प से परिचित कराने में समर्थ यह कृति विद्वानों तथा लोकरसिकों में बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तक समय साक्ष्य 15, फालतू लाइन, देहरादून-248001 से प्रकाशित 294 पृष्ठ लिए 350 रूपये मूल्य की है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

जइसे उनके दिन बहुरे : लोकरंगों के तन्दुरे

डॉ. रामबहादुर मिश्र पिछले चार दशक से अवधी भाषा के उन्नयन, विकास एवं प्रचार-प्रसार के लिए साधनाशील, रचनाधर्मिताव्रती बने हुए हैं। इस समर्पण यज्ञ में उन्होंने संस्कृतिपरक कण्ठसाहित्य की सभी विधाओं को प्रतिष्ठित करने का भगीरथ उपक्रम किया है।

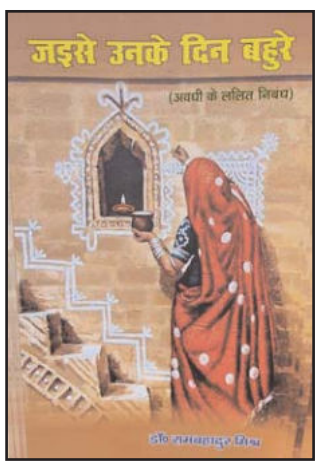

प्रस्तुत कृति 'जइसे उनके दिन बहुरे' उनके 21 ललित निबन्धों का सुललित संग्रह है जो लोकरंगों की धुनक देता तन्दुरा सिद्ध हुआ है। विषयगत वैविध्य लिए लोककथा, लोकगीत, कहावत, मुहावराजनित उत्सव संस्कार रहन-सहन, खान-पान से लेकर समसामयिक समस्या तक को लेखक ने बड़ी संजीदगी तथा संवेदना के साथ उकेरते हुए यह मूल्यवान धरोहर दी है जिसका सर्वत्र स्वागत होगा और अन्य अंचलों के विद्वान भी इससे प्रेरणा ग्रहण कर अपने क्षेत्र की रसवंती गागर को सागर देंगे।

पुस्तक के प्रारम्भ में डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने लिखा- 'अपनी बोली-बानी में नैसर्गिक लोक लहजे में निकले ठेठ और देशज उद्गार से अवधी गद्य के मानवीकरण को बल मिलेगा।' वहीं जगदीश 'पीयूष' ने एक नई लकीर बनाते अपने मंतव्य में कहा- 'डॉ. मिश्र अवधी के लिए वही कार्य कर रहे हैं जो महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने किया।'

अवध भारती प्रकाशन, नरौली, हैदरगढ़, बाराबंकी से प्रकाशित 112 पृष्ठीय इस पोथी का मूल्य 300 रूपया है।

-म. भा.

स्वागत बसंत तुम प्रकृति संत

बसंत को ऋतुराज कहा गया है। छहों ऋतुएं और प्रकृति का विविध वैविध्य विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं, केवल और केवल भारत में ही देखने को मिलेगा। यहीं वेद पुराण और अन्य ग्रन्थ लिखे गये। ऋषि-मुनियों ने जो ज्ञान-विज्ञान की समृद्ध धरोहर और संपदा दी उसी कारण हमारा देश सर्वाधिक प्राचीन परम्परा और विश्व गुरु गौरव वाला कहा गया है।

बसंत को संत की उपमा से विभूषित किया गया है। इस ऋतु में न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी पड़ती है। ऐसे सुहावने मौसम में पूरी प्रकृति नये रूप-यौवन में छविमान होती लगती है। मंद-मंद हवा के चलते पुराने पत्ते झड़ने लगते हैं और नई कोंपलें फूटती दस्तक देती हैं। पलाश अर्थात् टेसू भी खिलने लगता है।

टेसू के फूलों से केसरिया रंग बनाया जाता है जिससे होली खेली जाती है। पक्षियों के मौन बोल फूटने लगते हैं। चारों ओर कोयल की वाणी कुहु-कुहु पियु-पियु बड़ी मादक मीठी स्वरांजलि से प्रकृति को गुंजित किये रहती है तब ही जाकर कोयल और काक अर्थात् कौए की पहचान होने लगती है। इसीलिए कहा गया है- 'काक: काक: पिक: पिक:।' बाकी के समय में दोनों की पहचान ही नहीं रहती है।

इस ऋतु में नवजात शिशु को होलीथड़े परिक्रमा लगाई जाती है। जच्चा के लिए पीला पहनावा 'पीलिया' लाया जाता है। बच्चों को पीली पोशाक में पाठशाला भेजा जाता है। घरों में केसरिया रसोई कढ़ी-खीचड़ी तथा मिष्ठान्न में केसरिया भात बनाया जाता है। बेसन चक्की, बेसनी लड्डू का देवता के चढ़ावा चढ़ाया जाता है। फाल्गुन के गीत और फागण्ये पोमचे, केसरिया पगड़ी-साफा का शृंगार चहुंओर देखने को मिलता है।

आइये, कोरोना के कालचक्र को अलविदा कर हम बसंत के स्वागत में नई उम्मीद की शंखध्वनि करें।

- तुलसीदेवी

पंचफणी नाग

पांच फण वाले दुर्लभ नागराज अब कभी-कभी ही नजर आते हैं। धर्मशास्त्रों के अनुसार भगवान विष्णु हजार फण वाले शेषनाग की शय्या पर शयन करते हैं जबकि लौकिक दृष्टि से एक से अधिक फण वाले नागराज का अस्तित्व दुर्लभ माना जाता है। कर्नाटक के मंगलूर में एक मकान में एकबार अचानक प्रकट हुए पांच फण वाले नागराज ने यह सिद्ध कर दिया कि पारलौकिक सहस्त्रफणीय शेषनाग के पंचफणीय लौकिक वंशज का इस धरा पर अस्तित्व है। नाग पंचमी का दिन तो नाग पूजा का ही पर्व माना जाता है जबकि वर्ष के शेष दिनों में भी श्रद्धालु नाग के दर्शन होते ही उनकी पूजा करने लगते हैं।

- राष्ट्रदूत, 26 अप्रेल 2010

लोकविधा के अध्येता डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि राजस्थान का यह सौभाग्य है कि यह विश्व विख्यात देव-भूमि के रूप में जानी जाती है। यहीं चित्तौड़ के किले पर देवउठनी चतुर्दशी को दिव्य आत्माओं, देवताओं का मेला भरता है जिसे मैं भी लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ की महत्ती कृपा से देख सका। स्वयं कल्लाजी ने इसी किले पर युद्ध कर असीम वीरता दिखाई। मृत्युपरान्त जगत्जननी ने उन्हें लोकदेवता के रूप में जन कल्याण का दायित्व सौंपा। ये कल्लाजी पंचफणी योनि में हैं जबकि तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ नौ फण लिये हैं। डॉ. भानावत ने कल्लाजी पर एक पुस्तक 'लोकदेवता वीर कल्लाजी राठौड़' नाम से लिखी जिसका परिवर्द्धित संस्करण हाल ही में राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर से प्रकाशित हुआ है।

- डॉ. कहानी भानावत

कोरोना योद्धा सम्मानित

उदयपुर (वि.)। राजभवन में आयोजित करोना वीर सम्मान समोराह में भाजपा विधायक संजय केलकर के सानिध्य में महामारी के दौरान बिना भय के जरूरतमंदों की सेवा और सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट काम करने के लिए घोडबंदर रोड स्थित गुरुद्वारा की अध्यक्षा माताजी दविंदरकौर खालसा, सामाजिक संस्था जैन सोसल ग्रुप के अध्यक्ष विनोद जैन, महामंत्री व ज्वेलर्स असोसिएशन के अध्यक्ष पंकज जैन का राज्यपाल भगतसिंह कोश्यारी के करकमलों द्वारा कोरोना योद्धा सम्मान से सम्मानित किया गया।

साइकिल पर जंगल की सैर

उदयपुर (वि.)। मेवाड़ अंचल में ईको टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए वन विभाग, ग्रीन पीपल सोसायटी, पर्यटन विभाग, ली टूर डी इंडिया तथा बेला बसेरा रिसोर्ट के संयुक्त तत्वावधान में साइकिल पर प्रकृति के त्रिदिवसीय रोमांच 'पेडल टू जंगल' का आयोजन बड़ा सफल रहा। यात्रा संयोजक और ग्रीन पीपल सोसायटी के अध्यक्ष रिटायर्ड सीसीएफ राहुल भटनागर ने बताया कि इस सफर को पानरवा से मुख्य वन संरक्षक आर.के. खेरवा ने झण्डी दिखाकर रवाना किया। साइक्लिस्ट माण्डवा, आडाहल्दू, छाली बोखरा, डैया अम्बासा होते हुए गुजरात में पोलो फोरेस्ट पहुंचे। पोलो फोरेस्ट इंटरप्रिटीशन सेंटर में गुजरात के अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ.ए.पी.सिंह के मुख्य आतिथ्य में समापन हुआ।

अपना देश अपनी संस्कृति

जब डॉ. त्यागी को कोबरे ने काट खाया

सांप काटने पर मुझे आलपीन चुभने जैसा लगा। फिर गर्मी महसूस हुई। जलन हुई और मेरा तापमान बढ़ता हुआ दिखा। कुछ-कुछ शून्यता लगी। संवेदनशीलता का अभाव लगा। सिर तथा बगलों में हल्का पसीना हुआ। दिमाग इतना भारी हो गया जिससे रात भर मैं सो नहीं सका। कानों में गुंगारियाना शुरू हो गया। आंखें देखते हुए भी अनदेखी हो गई। सोचने-समझने में क्षीणता आ गई। आंसू आना चाहते हुए भी नहीं आए। देखते-देखते कण्ठ की मांसपेशियां मोटी होने लग गईं। लगा मौत मुझे घेरती जा रही है। आंख की पुतली जैसे ठहर गई। भौंहें लटक गईं। मुंह से लार गिरनी प्रारम्भ हो गई। घुटने हिलने लग गये।

उदयपुर में निवास कर रहे डॉ. हरिराज त्यागी को सांप पालने का शौक चर्याया। उन्होंने अपने घर में वर्षों तक सांप पाले। अनेक सांप जंगलों से और अनेक घर-परिवारों से पकड़े। उनमें कोबरा भी थे। ये जहरीले होते हैं। उनके दंश के त्यागीजी शिकार भी बने मगर कभी हार नहीं मानी।

मैंने अनेक बार उनके निवास पर पल रहे सांपों के करतब, रहनी-सहनी और डरावनी मुद्राएं भी देखीं। सांपों के बच्चों के कौतुक भी देखे। उन पर लिखा भी। डॉ. त्यागी ने तो अपनी बच्ची का नाम भी नागमणि रखा। उनसे सुनी एक घटना का जिक्र यहां प्रस्तुत है-

उदयपुर के अस्थल मन्दिर में प्रतिवर्ष ही वहां के महंत श्री मुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री जन्माष्टमी का खास उत्सव आयोजित करते। इसमें वे देव दर्शन की भव्य झांकी के अलावा और भी झांकियों के बड़े ही चित्ताकर्षक एवं दर्शनीय रूप प्रदर्शित करते।

एकदिन त्यागीजी ने महंतजी से निवेदन किया कि जन्माष्टमी उत्सव पर यदि आपकी इजाजत हो तो मैं जीवित सर्प का प्रदर्शन कर सकता हूं। महंतजी उनके सर्पपालक रूप से भलीभांति परिचित थे अत: इस प्रस्ताव को विशेष आकर्षक मानते हुए स्वीकृति दे दी।

14 अगस्त 1979 को जब डॉ. त्यागी अस्थल मन्दिर में सर्प प्रदर्शन हेतु अपने घर पर सांपों को प्रशिक्षित कर रहे थे तब अचानक एक कोबरे ने उनके हाथ के अंगूठे के पास वाले हिस्से को बुरी तरह जकड़ लिया और पूरे हाथ पर कट्ठा लिपट गया। हिम्मत कर बड़ी मुश्किल से त्यागीजी ने उसके जबड़े को खोल अपना हाथ छुड़ाया और उसे पिंजरे में बंद किया। वह दो दिन तक आक्रांत बना अपना फन सीधा कर तनकर बैठा रहा।

डॉ. त्यागी ने बताया कि तब मेरे पास कुल छोटे-बड़े 36 सांप थे और मैं उस दिन संध्या को अपने खुले आंगन में पांच कोबरों को एक जगह केन्द्रित कर बैठे रहने का प्रशिक्षण दे रहा था। प्रशिक्षण के दौरान मैंने बिजली के तार से सांपों को हल्का सा पीटा। इस दिन जन्माष्टमी थी अत: मेरे मौन रहने का व्रत था। प्रशिक्षण पूर्ण होने पर मैंने दूध पिलाकर तीन सांपों को पिंजरे में बन्द कर दिया। चौथे को बन्द करने के लिए मुड़ा ही था कि पास ही खड़ा पांचवा सांप मेरी ओर लपका और मुझे काट खाया। तब मेरा ध्यान उस ओर नहीं था।

यह सांप कोई 6 फीट का था और बड़ा बलिष्ठ था। कलाई जितना बड़ा था और कोई तीन इंची मोटाई लिये था। वजन 5 किलो के करीब था। इसी सांप को मैंने दो दिन पहले दो चूहे डाले। छोटे चूहे को वह खा गया। बड़ा चूहा जाली काटकर निकल गया। तब कोबरा भी निकल गया। इसे मैंने इधर-उधर बहुत ढूंढ़ा पर मिला नहीं। अंत में पिंजरे के नीचे ही बैठा पाया।

डॉ. त्यागी ने कहा कि कोबरे के काटते ही मैं जरा भी विचलित नहीं हुआ। मैंने अपना प्राथमिक उपचार आप किया, जैसा कि मैं सदैव करता रहा मगर 20 मिनिट बाद देखता हूं कि काटा हुआ स्थान फूलना प्रारम्भ हुआ तब मैं उदयपुर के एमबी अस्पताल के वार्ड नं. 4, खाट नं. 26 में भरती हो गया जहां दूसरे दिन मेरी हथेली जंघा जैसी हो गई जिससे मेरा पहना बुशर्ट तक फाड़कर निकालना पड़ा। रातभर मुझे नींद नहीं आई।

सांप काटने पर मुझे आलपीन चुभने जैसा लगा। फिर गर्मी महसूस हुई। जलन हुई और मेरा तापमान बढ़ता हुआ दिखा। कुछ-कुछ शून्यता लगी। संवेदनशीलता का अभाव लगा। कोई 20 मिनिट बाद सिर पर तथा बगलों में हल्का पसीना हुआ। दिमाग इतना भारी हो गया जिससे रात भर मैं सो नहीं सका। मुझे विशेष प्रकार की घबराहट रही। कानों में गुंगारियाना शुरू हो गया। आंखें देखते हुए भी अनदेखी हो गई। सोचने-समझने में क्षीणता आ गई।

मैंने किताब पढ़ने की कोशिश की पर नहीं पढ़ पाया। अचेतनता सी महसूस हुई। गले में विशेष प्रकार का दर्द होने लगा। वह रूंध-सा गया। आंसू आना चाहते हुए भी नहीं आए। देखते-देखते कण्ठ की मांसपेशियां मोटी होने लग गईं। लगा कि जैसे मेरा स्वांस रूकता जा रहा है और मौत मुझे घेरती जा रही है। आंख की पुतली जैसे ठहर गई। भौंहें लटक गईं। मुंह से लार गिरनी प्रारम्भ हो गई। घुटने हिलने लग गये।

डॉ. त्यागी बोले, पहली बार ही मैंने ऐसा अनुभव किया। डाक्टरों के लिए भी मैं ऐसा पहला सांप काटा व्यक्ति था जो मौत के निकट पहुंचकर भी बचा रहा। अपने अनुभवों तथा इस किस्म का जो साहित्य मैंने पढ़ रखा था, मैं डाक्टरों को बताता रहा।

डॉ. त्यागी से आज भी यदाकदा जब मिलना होता है, वे बड़ी प्रसन्न्ता से मिलते हैं। पुरानी बातें याद करते हैं। उनकी हथेली पूर्णत: ठीक नहीं हुई है पर वे कहते हैं, ''मुझे यह मालूम हो गया है कि गलती कहां किससे हुई है और मैं क्या कुछ करता तो बिल्कुल दुरस्त हो जाता। मुझे प्लास्टिक सर्जरी भी करानी पड़ी लेकिन अभी भी मेरी ऊंगलियां पूरी तरह मुड़ती नहीं हैं। बावजूद इन सबके मैं सांप से भयभीत नहीं हूं।'' बोले, ''सांपों के सम्बन्ध में इतनी सारी जानकारी और इतने सारे अनुभवों का जो मैंने खजाना अर्जित किया है, वह मेरी सबसे बड़ी धरोहर बना हुआ है, इसलिए मैं भाग्यशाली भी हूं।''

- म. भा.

इन्दिरा आईवीएफ ने पार किया 75000 सफल आईवीएफ प्रेगनेंसीज़ का आंकड़ा

उदयपुर (वि.)। भारत में नि:संतानता उपचार क्लिनिक्स की अग्रणी श्रृंखला इन्दिरा आईवीएफ ने चिकित्सा विशेषज्ञता और तकनीकी कौशल द्वारा 75000 सफल आईवीएफ प्रेगनेंसीज़ का मुकाम हासिल कर लिया है। इन्दिरा आईवीएफ, एक उद्देश्य के साथ स्वास्थ्य सेवा संगठन के रूप में भारत के दूरदराज के क्षेत्रों तक नि:संतानता का उपचार उपलब्ध कराने पर गौरवान्वित महसूस करता है। वर्ष 2011 में अपनी स्थापना और सम्पूर्ण भारत में 94 केन्द्रों के साथ एक लाख साईकिल्स करके आज इन्दिरा आईवीएफ देश की सबसे बड़ी और सबसे विश्वसनीय फर्टिलिटी हॉस्पिटल श्रृंखला है।

इन्दिरा आईवीएफ के संस्थापक और चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया ने कहा कि हमें उन परिवारों के बारे में सोचने पर संतुष्टि मिलती है जिन्हें हमने अपने काम से प्रभावित किया है। हमने समाज में नि:संतानता के प्रति नज़रिये को बदलने की शुरूआत की थी और खुशी की है कि हम इसमें सफल हुए हैं और इस समस्या के समाधान के लिए लोग चिकित्सा विज्ञान की ओर रुख कर रहे हैं।

इन्दिरा आईवीएफ के सह-संस्थापक और सीईओ डॉ. क्षितिज मुर्डिया ने कहा कि ये सफलता की सभी कहानियां, सफल क्लिनिकल परिणामों पर हमारे सामूहिक रूप से दिये गये ध्यान का परिणाम है। इसके अलावा नवीनतम हेल्थकेयर टेक्नोलॉजी को शामिल करते हुए कुछ ही समय में हमारी संगठनात्मक विशेषज्ञता में परिवर्तन किया है।

इन्दिरा आईवीएफ के सह-संस्थापक और निदेशक नितिज मुर्डिया ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में आईवीएफ उपचार की सफलता दर में बहुत सुधार हुआ है क्योंकि अधिकांश दम्पति पहली बार में ही गर्भधारण करने में सक्षम हुए हैं। नि:संतानता और आईवीएफ उपचार से जुड़े कलंक और मिथकों को कम करने की दिशा में प्रभावशाली काम करने पर हमें गर्व है। हम अपने काम से देश के सबसे दूरस्थ हिस्सों में भी सकारात्मक परिणाम लाना जारी रखेंगे। यहां अंडे और शुक्राणु फ्रीजिंग के लिए परामर्श और सुविधाएं भी प्रदान की जाती हैं। इन्दिरा आईवीएफ में 2200 से अधिक कुशल लोग अपनी सेवाएं दे रहे हैं। यहां एक वर्ष में लगभग 33000 से अधिक आईवीएफ प्रक्रियाएं की जाती हैं जो देश में सर्वाधिक है।

जिंजर गार्लिक पेस्ट का नया अभियान

उदयपुर (वि.)। भारत के सबसे बड़े प्रोसेस्ड फूड ब्रांड निलोन्स ने इंटरनेट पर अपना कैंपेन निलोन्स जिंजर गार्लिक पेस्ट है तो जहॉन है शुरू किया है। इस कैंपेन की परिकल्पना एमएंडसी सात्वी फरवरी ने की है। यह कैंपेन खाने को पोषण एवं स्वाद से भरपूर रखते हुए, अदरक और लहसुन को छीलने और काटने की थकाउ प्रक्रिया को आसान करने पर केंद्रित है।

निलोन्स इंडिया के एमडी दीपक सांघवी ने कहा कि आजकल ज्यादातर उपभोक्ता अपनी डाइट में हेल्दी विकल्प शामिल करने के साथ ही अपनी इम्यूनिटी को बढ़ाने के तरीके ढूंढ रहे हैं। ऐसे समय में, ब्रांड ऐसा उत्पाद लेकर आया है जोकि इन सभी जरूरतों का पूरा कर रहा है। इस कैंपेन का मुख्य उद्देश्य दर्शकों के बीच स्वास्थ्य, सुविधा और इम्यूनिटी के बारे में चर्चा करने को बढ़ावा देना है। कैंपेन में कॉमिक स्ट्रिप्स, अदरक और लहसुन के कॉमिक कैरेक्टर्स के बीच मजेदार बातचीत, फिल्मी डायलॉग, व प्रतियोगिता शामिल की गई हैं।

ग्रामीण दंत चिकित्सा केन्द्र का जगत में शुभारम्भ

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक डेन्टल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल देबारी द्वारा जगत गांव के पेसिफिक हॉस्पिटल प्रांगण में ग्रामीण दंत चिकित्सा केन्द्र का शुभारम्भ किया गया। मुख्य अतिथि पेसिफिक डेन्टल कॉलेज के चेयरमेन आशीष अग्रवाल, विशिष्ठ अतिथि जगत सरपंच बाबरू मीणा तथा पंचायत समिति सदस्य यशवन्त सिंह ने फीता काटकर चिकित्सा केन्द्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. भगवानदास राय, डॉ. कैलाश असावा एवं डॉ. मृदुला टॉक मौजूद थे। डॉ. असावा ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में दंत चिकित्सा के अभाव को देखते हुए पेसिफिक डेन्टल कॉलेज की ओर से सभी प्रकार की दंत चिकित्सा की शुरूआत की गई है। ग्रामीण दंत चिकित्सा केन्द्र के प्रभारी के रूप में डॉ. नरेन्द्र टॉक प्रतिदिन अपनी सेवाएं देंगे।

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 15 फरवरी 2021

सम्पादकीय

कोराना, धरणा और धारणा

कोरोना जैसी आपदा पहले कभी नहीं आई। बड़े-बूढ़े जो अपनी उम्र की सौ की नपती कर रहे हैं वे भी कहते हैं कि उन्होंने भी कभी ऐसा काल नहीं देखा, सुना। छपन्या का काल भी ऐसा नहीं था हालांकि ढेरों मौतें हुई। खाने के जबर्दस्त लाले पड़े पर कोरोना एक तो पूरे विश्व में छाया है और यह किसी खाने-पीने के अभाव का सूचक नहीं रहा।

ऐसा धरणा भी नहीं रहा। वक्त-बेवक्त, मौसम-बेमौसम यहां अपनी मांगें मनवाने के लिए धरणे रहते आये हैं मगर किसानों का जैसा धरणा देखा जा रहा है वैसा देखने में नहीं आया। हमारे देश की खासियत ही यही रही कि यह गांवों का देश है। असली आत्मा गांवों में ही निवास करती है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने तो ग्राम वंदना में लिखा-

'अहा! ग्राम्य जीवन ही क्या है।
क्यों न इसे सबका मन चाहे।।
थोड़े में विश्राम यहां है।
ऐसी सुविधा और कहां है।'

और भी कवियों ने लिखा, 'भारतमाता ग्रामवासिनी', 'जय-जय भारतमाता।' किसानों को अन्नदाता कहा। अन्न-दान को श्रेष्ठतम दान कहा। लोकगीतों में अनेक गीत कृषि से सम्बन्धित हैं। शिवजी जो देवों में देव महादेव हैं, वे भी हल हांक रहे हैं। कहा है, 'हल हांके महादेव।'

लोकगाथा में कहा गया कि पृथ्वी पर जब भार अधिक बढ़ गया तो कोई जीव उसे उठाने को तैयार नहीं हुआ, तब गाय ने अपने पुत्तर को आज्ञा दी, 'जाओ बेटा, यह काम तुम करो।' तब बैल ने अपने कंधे पर भार झेला। आज भी पूरी कृषि का दारोमदार बैल अपने कंधे पर उठाये है।

धरणाजीवी अपनी बात पर अड़ पकड़े हैं। चड़ यानी चड़स तो पानी द्वारा फसल लहलहाती है। यदि वह अड़ पकड़ ले तो स्थिति की भयावहता का सहज अन्दाज लगाया जा सकता है पर किसान भाई अड़ पकड़े हैं।

लोकतंत्र में अपनी बात कहने, मनाने, मनवाने का सबको पूरा हक है। किसान जिम्मेदार नागरिक हैं। सरकार कोई व्यक्ति नहीं, नागरिक नहीं। हम सबने उसे अपने लोकतांत्रिक अधिकारों द्वारा शासन चलाने की सुविधा दी है सो इसमें दोनों पक्षों को नरमाई का रूख रखते बातचीत के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाते रामासामा करना चाहिये।

लोक कहावत कहती है, अड़ियल रूख नहीं रखकर कोमलता से काम करने पर ही सिद्धि मिलती है। कहा है, 'पान सड़े, घोड़ा अड़े, विद्या विसर जाय' सो सरकार ने तो अपने मन, हिये और माथे के द्वार खुले रखे हैं। यदि हम भी वैसा कर लें तो छोटे बाप के नहीं हो जायेंगे। राष्ट्रगीत का प्रारम्भ ही जन गण मन से होता है। तीनों का आदरभाव ही हमारी जय है।

पहली बार

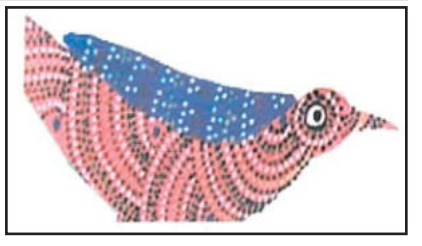

कई चीज़ें जिंदगी में
ऐसे ही हो जाया करती हैं
पहली बार।
अचानक मिल कर कोई
बहुत अपना सा लग जाता है
पहली बार।
रिश्तों की ठोकर से डगमगा जाते हैं
जीवन की राह पर क़दम
पहली बार।

और यूँ ही इंतज़ार के पल,
दिनों से सालों में बदल जाते हैं
पहली बार।
पहली बार से पहले कौन सोचता है
पहली बार।
क्या से क्या हो जाता है
जब कुछ यूँ ही हो जाता है
पहली बार।।

-प्रेमलता पिंकी वैष्णव

यह दशक भारत का होने वाला है : नरेन्द्र मोदी

चेन्नई, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तमिलनाडु और केरल को करोड़ों रुपये की परियोजनाओं की सौगात दी। साथ ही भाषा और संस्कृति का जिक्र कर दोनों राज्यों के लोगों के साथ भावनात्मक लगाव भी दिखाया। चेन्नई में मेट्रो रेल के पहले चरण के विस्तार का उद्घाटन करने के साथ ही अलग-अलग क्षेत्रों की करोड़ों रुपये की विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास किया। केरल के कोच्चि में बीपीसीएल के पेट्रो-केमिकल परिसर को भी राष्ट्र को समर्पित किया और अन्य कई परियोजना की भी शुरुआत की। दोनों राज्यों में इस साल अप्रैल और मई के बीच विधानसभा चुनाव होने हैं।

चेन्नई के नेहरू इंडोर स्टेडियम में मोदी ने उत्तरी चेन्नई में वाशरमैनपेट को विमको नगर से जोड़ने वाले मेट्रो के 9.01 किलोमीटर लंबे भाग का उद्घाटन किया। इस परियोजना पर 3,770 करोड़ रुपये की लागत आई है। यहीं अट्टीपट्टू की चौथी लाइन और विल्लुपुर की मयलादुथुरई तंजावुर/मयलादुथुरई तिरुवुर एकल रेल लाइन के विद्युतीकरण को राष्ट्र के नाम समर्पित किया।

इस मौके पर प्रधानमंत्री ने कहा कि इस साल का बजट सुधारों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। विश्व बड़े उत्साह और सकारात्मकता के साथ भारत की ओर से देख रहा है। भारत की 130 करोड़ जनता के कठिन परिश्रम की बदौलत यह दशक भारत का होने वाला है।

प्रधानमंत्री ने आइआइटी मद्रास में एक डिस्कवरी कैंपस की आधारशिला भी रखी, जिसका निर्माण पहले चरण में एक हजार करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से नजदीकी थय्यूर में किया जाएगा। कोच्चि में विलिंगडन द्वीप पर भारत पेट्रोलियम के छह हजार करोड़ रुपये के पेट्रोकेमिकल परिसर और जहाज के लिए रो-रो जलमार्ग को राष्ट्र को समर्पित किया। ये परियोजनाएं भारत के विकास की गति को और रफ्तार देंगी। उन्होंने कोच्चि पोर्ट ट्रस्ट के इंटरनेशनल क्रूज टर्मिनल और कोच्चि शिपयार्ड के विज्ञान सागर का भी उद्घाटन किया। विज्ञान सागर मैरीन इंजीनियरिंग प्रशिक्षण संस्थान है। प्रधानमंत्री ने एक ही स्थान से पांच परियोजनाओं का उद्घाटन किया।

मुख्यमंत्री गहलोत द्वारा विभिन्न योजनाओं में 1176 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान

जयपुर (सुजस)। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग एवं सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी विभिन्न योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए करीब 1176 करोड़ रूपए के अतिरिक्त बजट प्रावधान को मंजूरी दी है। इनमें स्वास्थ्य गतिविधियों के लिए 520 करोड़, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम सहित अन्य गतिविधियों के लिए 520 करोड़ 37 लाख रूपए के अतिरिक्त बजट प्रावधान को मंजूरी दी है। प्रदेश में उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए रिप्स के तहत लंबित दावों के निस्तारण के लिए करीब 471 करोड़, निजी विद्यालयों को पुनर्भरण करने के लिए 166 करोड़ 36 लाख तथा मुख्यमंत्री विशेष योग्यजन पेंशन योजना के लिए 18 करोड़ 52 लाख रूपए के अतिरिक्त बजट प्रावधान की स्वीकृति दी है।

पाठकों के पत्र

नित नये शिखरों पर आरोहण

शब्द रंजन नियमित मिल रहा है- मुलायम (सोफ्ट) और मुद्रित दोनों ही रूपों में। 'स्मृतियों के शिखर' स्तंभ में आप अद्भुत स्मृतियों के नित नये शिखरों पर आरोहण कर रहे हैं।

फरवरी-2021 (प्रथम) तक इसकी 116 कड़ियाँ हो गई हैं और यह निरंतर गतिमान है। लोकजीवन की खुशबू से सराबोर इस तरह का संस्मरणात्मक लेखन एक कीर्तिमान है। अब उन ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों, संस्थानों और चीजों की ऐसी जीवंत चर्चाएँ दुर्लभ ही हैं। इन्हें चिर-स्थायी बनाने के लिए 'स्मृतियों के शिखर' पर कई खण्डों में पुस्तक का प्रकाशन किया जा सकता है।

जनवरी-2021 (द्वितीय) में आपने कानोड़ की शिक्षा संकुली विभूतियों पर प्रेरणादायी जानकारी प्रदान की। इसमें आपने जैनधर्म की स्थानकवासी परम्परा के लिए 'बारह पंथ' शब्द का जो प्रयोग किया, वह सही नहीं है। जैन धर्म में 'बारह पंथ' नामक कभी कोई पंथ नहीं रहा।

हाँ, 'बाईस पंथ' नाम तो रहा और इसका इतिहास भी रोचक है। वर्तमान की अधिकांश स्थानकवासी सम्प्रदायें बाईस पंथ की शाखाएँ हैं। कुछ स्थानकवासी जैनसंघों के नाम के साथ आज भी यह शब्द प्रयुक्त होता है।

फरवरी-2021 (प्रथम) में निहाल अजमेरा ने उनके लेख में बताया कि जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव 72 कलाओं के प्रथम उपदेशक थे। आदिनाथ ऋषभदेव ने 72 कलाएँ पुरुषों के लिए बताईं तो महिलाओं के लिए भी उन्होंने 64 कलाओं का ज्ञान दिया। वस्तुत: ऋषभदेव कुल 136 कलाओं और विद्याओं के आविष्कर्ता और उपदेशक थे।

- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई

उपर्युक्त सन्दर्भ में लेख है कि इतिहास ग्रन्थों में बारह पंथ कोई पंथ भले ही नहीं रहा हो पर जनश्रुति और समाज में, बारह पंथ, तेरह पंथ के रूप में बारापंथी-तेरापंथी शब्द ही प्रचलित है। मेवाड़ में 22 पंथी की बजाय 22 टोला नाम यदाकदा सुनार्द देता रहा। पुरुष प्रभुत्व समाज में भगवान ऋषभदेव द्वारा 72 कलाओं का ही प्रचलन अधिक है। यों भी लोक सदैव अलिखित अर्थात् श्रुत और स्मृति परम्परा पर आश्रित रहता है।

- संपादक

सबसे बड़ी चिंता देशज शब्दों का लोप

01 फरवरी के शब्द रंजन में पाठकों के पत्र में प्रकाशित इन्दौर निवासी प्रो. शान्तिलाल बांठिया की गुड़ निर्माण विषयक काकब सम्बन्धी शब्द को 50 वर्षों बाद सुनने की चिन्ता से मैं भी पूर्णत: सहमत हूं। छोटीसादड़ी निवासी होने के कारण प्रो. बांठिया से तब से लेकर अब तक मेरा सम्पर्क बना हुआ है। प्रसन्नता है कि डॉ. महेन्द्र भानावत ने अपने लेखन के माध्यम से सैकड़ों देशज शब्दों को हिन्दी के समकक्ष जीवन्त करने का उल्लेखनीय प्रयत्न किया है परन्तु कृषि से जुड़े अनेक शब्द अभी भी अपने अस्तित्व से हाथ धोने की दुर्दशा भोग रहे हैं।

हाल फिलहाल मैं अपने पुत्र-पौत्र के साथ पूना में रह रहा हूं। कुए को याद कर ही जब मैं उसके ढाणा, भमण, ताकरा, चड़स, नाड़ी, पाटकड़ी, धोरा, क्यारा, फेरा, जुड़ा, आरो, हिंदरो, लाव, हेरो जैसे शब्दों को याद करता हूं तो एक-एक शब्द अपनी सांस्कृतिक विरासत लिए मुखातिब हुआ लगता है।

अफसोस यह भी है कि बच्चे-पोते इससे नितान्त अनभिज्ञ हैं जो उनकी मजबूरी भी है पर अब मैं चाहकर भी उन्हें इस शब्दावली से जुड़ा ग्रामीण परिवेश नहीं बता सकता। वे गांव, किसान, खेती आदि सबके सब ही एक भिन्न बदले हुए परिवेश में जीवनयापन कर रहे हैं। शब्द रंजन तब भी हमें उस ग्राम्य संस्कृति का रसास्वाद देने में सक्षम बना हुआ है। बहुत-बहुत बधाई।

-बनवारी दत्त जोशी, पुणे

स्मृतियों के शिखर (117) : डॉ. महेन्द्र भानावत

शब्दों की असीम शक्ति के मनीषी थे कन्हैयालाल सेठिया

'हल्दीघाटी की रेत की यह मंजूषा इस बात का एहसास कराती है कि आदमी हर पल जीवन संघर्ष का सुरसुरा है। हल्दीघाटी की यह माटी ऐसे संघर्ष में प्रतापी निर्णय का साहस और शौर्य प्रदान करती है।' सेठियाजी ने जहां अपने काव्य-ग्रंथों में मानवता के उदात्त पक्षों को जिस सहजता से गंगा-जमनी पाथेय दिया वहीं राजस्थान की रेत को एक समृद्ध रंगरेज की तरह सतरंगी बंधेजों में बांधा। उनकी काव्य-धारा की खनक युगों-युगों तक जनमानस को आप्लावित करती रहेगी।

कन्हैयालाल सेठिया हिन्दी एवं राजस्थानी के महामनीषी एवं युगद्रष्टा साहित्यकार थे। उनके निधन से लगा जैसे इन भाषाओं के पुरोधा युगपुरूष का अन्त हो गया। उनके द्वारा लिखी हिन्दी में 18, राजस्थानी में 15 तथा उर्दू में 2 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनकी कई कृतियों का अंग्रेजी, बांग्ला, मराठी तथा जर्मन में अनुवाद हुआ। पद्मश्री, डी.लिट् के अलावा सेठियाजी कई बड़े पुरस्कारों से नवाजे गये। उन्होंने 'निर्ग्रन्थ' काव्य संग्रह के लिए भारतीय ज्ञानपीठ का मूर्तिदेवी सम्मान तथा राजस्थानी कृति 'लीलटांस' पर केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त किया। मनीषी, नाहर, रामेश्वर टांटिया, सूर्यमल्ल मीसण, लखोटिया जैसे सम्मान-पुरस्कार भी उनके खाते में दर्ज होते रहे। यों 'धरती धोरां री' कविता ने उनको सर्वाधिक ख्याति, सर्वाधिक यश एवं सर्वाधिक गौरव प्रदान किया।

सेठियाजी से पहली बार मेरी भेंट लोकसंस्कृति शोध संस्थान द्वारा, सन् 1981 में चुरू में आयोजित एक समारोह में हुई। इस समारोह की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत द्वारा सेठियाजी को राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में डॉ. एल.पी. टैस्सिटोरी और मुझे लोककला के क्षेत्र में किये गए कार्यों के फलस्वरूप झवेरचंद मेघाणी की स्मृति में स्वर्ण पदक द्वारा सम्मानित किया गया।

समारोह के दूसरे दिन मैंने सेठियाजी से उनके जीवन-परिवेश तथा साहित्य-सृजन को लेकर कई मुद्दों पर बातचीत की। उन्होंने अमृत की तलाश को अपने चिंतन और लेखन का मूल उत्स मानते हुए कहा कि शब्द में छिपी असीम शक्ति से ही अमरत्व की प्राप्ति हो सकती है इसलिए मैं लिखता हूं। तीन वर्ष की उम्र से ही मुझे संसार सर्वथा अजीब लगने लगा। मैं घंटों रोता और बार-बार मुझे लगता कि मैं इस संसार में नितान्त अपरिचित व्यक्ति हूं और इस ग्रह का वासी नहीं हूं। जहां मृत्यु नहीं है, वहां से हम आये हैं इसीलिए हमारी स्मृति में अमरत्व की बात बैठी हुई है।

भाषा के प्रसंग में सेठियाजी ने कहा कि हर बात हर भाषा में व्यक्त नहीं की जा सकती। राजस्थान की संस्कृति और समृद्धि को व्यक्त करने के लिए राजस्थानी ही श्रेष्ठ भाषा है, दूसरी हो ही नहीं सकती। इसीलिए 'ताजमहल' को मैंने उर्दू में कहा। मेरा हिन्दी का लेखन तो समग्र भारत की दृष्टि से है। सेठियाजी को इस बात का अफसोस रहा कि बंगाल ने जैसे रवीन्द्रनाथ टैगोर और गुजरात ने महात्मा गांधी को दिया वैसे राजस्थान से हम कुछ नहीं दे सके। उन्होंने याद दिलाया कि रवीन्द्र संगीत की तरह सेठिया संगीत की ओर किसी का ध्यान नहीं गया जबकि उनके द्वारा लिखित सभी गीत श्रेष्ठ संगीत की पहचान लिए हैं। यों 'मींझर' का तो प्रत्येक गीत ही अलमस्त गेय है।

एक श्रेष्ठ कवि होते हुए भी सेठियाजी ने कोई महाकाव्य नहीं लिखा। जब मैंने इस ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया तो वे बोले कि कविवर हरिवंशराय 'बच्चन' ने भी मुझे महाकाव्य लिखने को कहा था किन्तु मैंने महसूस किया कि सूक्ष्मतम अभिव्यक्ति के लिए काव्य ही उत्तम है, महाकाव्य नहीं। महाकाव्य में अभिव्यक्ति की बड़ी गुंजाइश रहती है, अनुभूति की नहीं। गीत-रचना के प्रसंग में तनिक मुस्कान लिए बोले- 'गला होता तो मैं गंभीर नहीं लिख पाता। गले के संगीत और हृदय के संगीत में यही फर्क है।'

समारोह के पश्चात कलकत्ता आकर सेठियाजी ने अपने 28 जून 1981 के पत्र में मुझे लिखा- 'चुरू में आपसे मिलकर जो सुख हुआ निरन्तर स्मृति में है। लोकसाहित्य के प्रति आपके समर्पित जीवन से मैं विशेष प्रभावित हुआ।' चुरू में मैंने उनसे जो साक्षात्कार लिया उसे लिखकर उनके पास भेज दिया। इसका शीर्षक था 'अमृत की तलाश ही मेरे चिंतन का मूल।'

इसके उत्तर में उन्होंने अपने 10 अगस्त 1981 के पत्र में लिखा- 'आपके साथ चुरू में मेरी जो बातचीत हुई थी उसे आपने 'अमृत की तलाश ही मेरे चिन्तन का मूल' शीर्षक से लिखकर मुझे अपने पत्र के साथ भेजी थी। आज मैं उसे देख रहा था तो मुझे लगा कि आपके पहले प्रश्न के उत्तर में मैंने जो कहा वह अपनेआप में विरोधात्मक है। देहधारी चाहे वे किसी भी ग्रह में रहे हों, नाशवान ही हैं। वैसे मैं आपके सब प्रश्न के उत्तर भी एक विशेष मन:स्थिति में दे गया और उन उत्तरों में संशोधन की आवश्यकता है अत: आप मेरे और आपके बीच हुई बातचीत को प्रकाशन के लिए नहीं देने की कृपा करें।'

लगभग ऐसी ही बात उन्होंने मुझे 18 सितम्बर के अंतर्देशीय पत्र में लिखी- 'चुरू में जब आपको मैंने इंटरव्यू दिया था, मैं मानसिक रूप से अस्वस्थ था अत: आप द्वारा पूछे गये प्रश्नों के मेरे द्वारा दिये गये कई उत्तर परस्पर विरोधात्मक

राज्यपाल केशरीनाथ से सम्मानित होते डॉ. भानावत

तथा असंगत हैं। इसलिए आप उसे प्रकाशित नहीं करा नष्ट कर देने की कृपा करें।'

सेठियाजी से दूसरी बार उदयपुर में महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के समारोह में फरवरी 1984 में मिलना हुआ। इस समारोह में भी सेठियाजी और मैं दोनों साथ-साथ सम्मानित हुए। उन्हें महाराणा कुंभा तथा मुझे महाराणा सज्जनसिंह

हल्दीघाटी परिदृश्य

पुरस्कार प्राप्त हुआ। दूसरे दिन हमने हल्दीघाटी की यात्रा की। वहां रक्ततलाई पर कुछ समय के लिए वे मेवाड़ के सांस्कृतिक गौरव और इतिहास के विराट वैभव में खो गये।

चारों ओर पहाड़ियों से घिरे उस स्थल को वे लगातार निहारते रहे। मैंने उन्हें याद दिलाया, आपने धरती धोरां री कविता लिखी। यहां आकर कैसा महसूस कर रहे हैं? वे बोले- 'भानावतजी, यदि मेवाड़ मैंने पहले देख लिया होता तो ये पंक्तियां नहीं लिखता।' उन्होंने रक्तलाई से एक चिमटी माटी उठाई। पहले मुझे तिलक किया और फिर स्वयं ने अपनी ललाट को रक्त-लावण्य दिया लेकिन इससे से भी बड़ी बात तो यह रही कि हल्दीघाटी की जो माटी वे अपने साथ ले गये उसे प्लास्टिक की माचिस जैसी मंजूषा में देश के कई साहित्यकारों, कलाकारों तथा राजनेताओं को भेजी और मुझे लिखा- 'हल्दीघाटी की रेत की यह मंजूषा इस बात का एहसास कराती है कि आदमी हर पल जीवन संघर्ष का सुरसुरा है। हल्दीघाटी की यह माटी ऐसे संघर्ष में प्रतापी निर्णय का साहस और शौर्य प्रदान करती है।'

मेरे संग्रह में सेठियाजी के लिखे अधिकांश पत्रों में दीवाली पर लिखे गये शुभकामना पत्र भी हैं। इनमें चार-चार पंक्तियों में जो संदेश व्यक्त किये गये हैं वे काव्य-पंक्तियां ही बड़ी अनुपम और मूल्यवान थाती हैं। राजस्थानी के पत्रों में वे तिथि तक मान्य संवत की लिखते थे। यह वानगी इस प्रकार है-

(1) दिवळां री संगत कर सुधरी, मन री काळी रात।
काढ़ धर्‌यो चोख्योड़ो सूरज, बावड़ियो परभात॥
(दिवाळी 2042)

(2) तम रो डील बड़ाळ घणो पण जाबक काची छाती।
भरै चूंठियो कोनी संकै तमक दियै री बाती॥
(दिवाळी 2045)

(3) तम नै देख बारणै आयो, काढ्यौ लौ रो टीको।
दिवळै री करुणा मावस रो, रंग कर दियो फीको॥
(दिवाळी 2046)

(4) नेह विहूणा नैण, पड़्या है सगळा दिवळा खाली।
बवै रंग ज्यूं रगत मिनख रो, होळी बणी दिवाळी॥
(दिवाळी 2047)

(5) हेत नहीं हिवड़ै रयो, नैणा रयो न नेह।
मांय अंधेरो मिनख रै, दिवळा करसी केह?
(दिवाळी 2050)

क्षमापना दिवस, संवत्सरी पर भी उन्होंने मुझे क्षमापनापत्र भेजा। एक पत्र में ये पंक्तियां लिखीं-

गयै बरस में हुई हुवै जे, म्हारी कोई भूल।
खमा सुमन बरसाओ आत्मन, बिणसै हिय रो सूळ॥
(छिमछरी 2047)

यही नहीं, नव वर्ष पर भी कभी-कभी उनके पत्र मुझे प्राप्त होते रहे। एक पत्र में उन्होंने लिखा-

सुधबुध भूल्यै मिनखपणै नै फेर जगावै नयो बरस।
नेह-नीर स्यूं आग बैर री फेर बुझावै नयो बरस॥
(नुवै बरस 2049)

सेठियाजी ने समय-समय पर अपनी प्रकाशित पुस्तकें भी मुझे भेजीं। मैं भी उन्हें अपनी छपी पोथियां भेजता रहा। जब मैंने अपनी कविताओं की 'कोई-कोई औरत' पुस्तक भेजी तो उन्होंने उसकी प्राप्ति के साथ दीपावली 1980 के पत्र में लिखा -'आपकी कृति 'कोई-कोई औरत' मिली। प्रसन्नता हुई। रचनाएं पढ़ गया हूं। उनमें एक सहज मौलिकता है। वह मन को अपनी ओर बरबस खींचती है। बधाई।'

मैंने जब 'पीछोला' नामक पाक्षिक पत्र का शुभारंभ किया तो सेठियाजी को प्रताप अंक के लिए रचना भेजने को लिखा। उन्होंने तत्काल पोस्टकार्ड पर यह दोहा लिख भेजा-

कोनी कोरो नांव रेत रो हळदीघाटी।
अठै ऊग्यो इतिहास, पूजीजै ईरी माटी।।

इस प्रकार सेठियाजी ने जहां अपने काव्य-ग्रंथों में मानवता के उदात्त पक्षों को जिस सहजता से गंगा-जमनी पाथेय दिया वहीं राजस्थान की रेत को एक समृद्ध रंगरेज की तरह सतरंगी बंधेजों में बांधा। उनकी काव्य-धारा की खनक युगों-युगों तक जनमानस को आप्लावित करती रहेगी। वे सच्चे मायने में शब्द में छिपी असीम शक्ति से अमरत्व प्राप्त करनेवाले वरेण्य साहित्यकार मनीषी थे।

16 दिसम्बर 2018 को कोलकाता की 'विचार मंच' संस्था के सम्मान्य साहित्यसेवी सरदारमलजी कांकरिया ने कन्हैयालाल सेठिया नामित 51 हजार रूपये का पुरस्कार प्रदान करने मुझे बुलाया तो सेठियाजी के सुपुत्र जयप्रकाशजी बड़ी आत्मीय मनुहार से अपने घर ले गये और सेठियाजी के सृजनधर्मी कक्ष में उसी आसन पर बिठाकर मेरा मान बढ़ाया। बड़ी देर तक हम कवि मनीषीजी के रचनात्मक पक्ष तथा साहित्यिक अवदान पर बातचीत करते अनेक यादों में ही तैरते बतियाते रहे।

गीतांजली विवि द्वारा 50 लाख की निधि समर्पित

उदयपुर (वि.)। राम मन्दिर के लिए गांव-ढाणियों से लेकर नगर-शहर तक निधि समर्पण का

दौर जारी है। इसी क्रम में गीतांजली विश्वविद्यालय की ओर से जेपी अग्रवाल ने 50 लाख रुपये भगवान श्रीराम के मंदिर के लिए अर्पित किए। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक प्रमुख श्रीवर्धन, विभाग संघचालक हेमेन्द्र श्रीमाली, महानगर संघचालक गोविन्द अग्रवाल, उद्योगपति अरविन्द सिंघल मौजूद थे। जेपी अग्रवाल ने कहा कि भगवान श्रीराम किसी दल, पंथ और समाज विशेष के नहीं बल्कि समग्र भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं। भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर देश की सांस्कृतिक एकता के सूत्र को और मजबूत करेगा।

जिंक फुटबाल ने एफसी गोवा को हराया

उदयपुर (वि.)। जिंक फुटबाल अकादमी की टीम ने फातोर्दा के डॉन बॉस्को कॉलेज ग्राउंड पर खेले गए अंडर-18 दोस्ताना मैच में एफसी गोवा को 3-0 से हरा दिया। दोनों टीमें पहले

हाफ के अधिकांश समय तक चढ़कर खेलीं। जिंक फुटबाल अकादमी टीम ने पहले हाफ के मध्य में अपने खेल का स्तर उठाया और गोल करते हुए आगे निकल गई। यह गोल बाएं फ्लैंक से विंगर जांगमिंटांग हाओकिप द्वारा बनाए गए शानदार मूव पर हुआ। हाओकिप के पास पर स्ट्राइकर बाबर ने एक आसान गोल किया। दूसरे हाफ का खेल बिल्कुल अलग रहा। जिंक फुटबाल टीम शुरुआत से ही हावी दिखी। लगातार अच्छा खेल रही जिंक फुटबाल टीम ने जल्द ही अपनी लीड दोगुनी कर ली। दूसरे गोल के लिए बाबर ने प्रयास किया था लेकिन गेंद गोवा के गोलकीपर से डिफलेक्ट होकर हाओकिप के पास गई और उन्होंने बिना गलती के गेंद को पोस्ट में डाल दिया। जिंक फुटबाल अकादमी ने मैच खत्म होने से कुछ समय पहले तीसरा और अंतिम गोल करते हुए अपनी जीत पक्की कर ली। यह गोल मिडफील्डर संदीप मरांडी द्वारा बनाए गए मूव पर हुआ।

श्री सीमेंट की परियोजना 'प्रणाम'

उदयपुर (वि.)। 'प्रणाम' श्री सीमेंट की सीएसआर प्रोजेक्ट का एक हिस्सा है, जिसे इस प्रोजेक्ट के तहत मदद की जाती है। यहां वरिष्ठ नागरिकों को एक बड़ा सहारा प्राप्त होता है। पुलिस कमिश्नर आइपीएस अनुज शर्मा द्वारा फिल्म निर्देशक गौतम घोष और गणमान्य लोगों की उपस्थिति में वरिष्ठ नागरिकों के लिए शुरू की गयी परियोजना 'प्रणाम' के अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित नये कार्यालय का औपचारिक उद्घाटन किया गया। श्री सीमेंट के प्रबंध निदेशक एवं द बंगाल के चेयरमैन विशिष्ट उद्योगपति, हरिमोहन बांगड़ ने कहा कि प्रणाम परियोजना कोलकाता के वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक अद्वितीय सामुदायिक-सेवा मॉडल है। इसे कोलकाता पुलिस एवं शहर-आधारित गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) के सहयोग से चलाया जा रहा है। मौजूदा समय में 20,000 वरिष्ठ नागरिक प्रणाम के पंजीकृत सदस्य हैं। 'द बंगाल और श्री सीमेंट' इसका समर्थन कर रहे हैं।

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी को स्कूल बस भेंट

उदयपुर (वि.)। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के महाप्रबंधक (दक्षिण) शिवओम दीक्षित ने सामाजिक उत्तरदायित्व प्रकल्प के तहत नारायण सेवा संस्थान द्वारा संचालित नारायण चिल्ड्रन एकेडमी को 32 सीटर बस भेंट की। उन्होंने दिव्यांगों, निर्धनों, मूक बधिर, प्रज्ञा चक्षु व नि:शक्त बालकों की अधुनातन शिक्षा व्यवस्था की सराहना करते हुए बैंक की सहभागिता निरन्तर रखने का आश्वासन दिया। अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने संस्थान की 35 वर्षीय सेवा यात्रा का जिक्र किया और निर्माणाधीन 450 बेड के हॉस्पिटल की जानकारी दी। इस अवसर पर उपमहाप्रबंधक कुंवर दिनेशप्रतापसिंह तोमर, क्षेत्रीय महाप्रबंधक अमरेन्द्रकुमार सुमन, समूह प्रभारी पलक अग्रवाल उपस्थित थे। ट्रस्टी देवेन्द्र चौबीसा ने आभार प्रदर्शन एवं संयोजन महिम जैन किया।

पिम्स में नवागंतुक विद्यार्थियों का स्वागत

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पिम्स), उमरड़ा में एमबीबीएस के नये विद्यार्थियों का प्रवेशोत्सव मनाया गया। सभी विद्यार्थियों के साथ कॉलेज प्रबन्धन का परिचय सम्मेलन आयोजित हुआ।

पिम्स के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने एमबीबीएस सत्र 2020-21 के छात्रों का स्वागत करते हुए कहा कि इंस्टीट्यूट में मेडिकल स्टडी के लिए बेस्ट वातावरण है। इंस्टीट्यूट छात्रों के मेडिकल शिक्षण में अधुनातन साधन सुविधाओं के साथ उनके भविष्य को उज्ज्वल बनायेगा। इस कॉलेज में सभी विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध हैं। तीस-चालीस वर्षों के अनुभवी प्रोफेसर, डॉक्टर एवं लेक्चरर विद्यार्थियों को अपने ज्ञान से लाभान्वित करेंगे। यहां पर बेस्ट फेकल्टी, आधुनिक एक्यूपमेन्ट और क्वालिटी एजुकेशन उपलब्ध रहेगी। यहां वह सब सीखने को मिलेगा जिसका अन्यत्र प्राय: अभाव ही मिलता है।

साई तिरूपति यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. इन्द्रजीत सिंघवी ने कहा कि पिम्स विद्यार्थियों के केरियर में एक मील का पत्थर साबित होगा। पिम्स के प्रिंसिपल डॉ. मधु सिंघल ने विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को एडमिशन की बधाई देते हुए नियम व शिष्टाचार से रहने की हिदायत दी। सीनियर विद्यार्थियों ने जूनियर विद्यार्थियों का स्वागत किया और भविष्य में हर तरह की सहायता का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर पिम्स की मेडिकल सुप्रिटेन्डेंट डॉ. चंदा माथुर, प्रो. प्रेसिडेंट देवेन्द्र जैन सहित सभी विभागों के फेकल्टी उपस्थित थे।

गारंटीड इंकम प्लान लॉन्च

उदयपुर (वि.)। इंडियाफर्स्ट लाईफइंश्योरेंस कंपनी लि. (इंडियाफर्स्ट लाईफ) ने इंडियाफर्स्ट लाईफ लांग गारंटीड इंकम प्लान लॉन्च किया है। यह विशिष्ट प्लान वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने और परिवार को जीवन की अनिश्चितताओं से सुरक्षा देने के लिए गारंटीड आय प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। सरल और गारंटीड समाधान प्रदान करने के उद्देश्य से यह ग्राहक केंद्रित सुरक्षा प्लान स्थिर रिटर्न देता है, ताकि जोखिम को कम से कम कर वित्तीय उद्देश्य पूरे हो सकें।

रुषभ गांधी, डिप्टी सीईओ, इंडियाफर्स्ट लाईफ इंश्योरेंस कंपनी लि. ने कहा कि ऐसा उत्पाद खरीदना सदैव बहुत रोमांचक होता है, जो आजीवन की गारंटी देता हो। इस प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए और हमारे 'कस्टमरफर्स्ट' सिद्धांत के साथ, हम इंडिया फर्स्ट लाईफ लांग गारंटीड इंकम प्लान प्रस्तुत करने के लिए बहुत उत्साहित हैं। यह एश्योर्ड व्यक्ति को 99 वर्ष की आयु तक टैक्स-फ्री आय की गारंटी देता है। यह मल्टी-जनरेशन प्लान 59 वर्ष के लंबे समय तक गारंटीड रिटर्न देता है, ताकि आप अपनी व अपने प्रियजनों की देखभाल कर सकें। इंडियाफर्स्ट लाईफ प्रमाणित उत्पाद पेश करने में सबसे अग्रणी है और टैक्स-फ्री गारंटीड नियमित आय प्रदान करता है।

टाटा मोटर्स और जी. आर. इंफ्राप्रोजेक्ट्स में साझेदारी

उदयपुर (वि.)। सरकार की तरफ से बढ़ते निवेश और लॉकडाउन के बाद कंस्ट्रक्शन सेक्टर (निर्माण क्षेत्र) में काम शुरू होने के बाद इंडस्ट्री के वर्ष 2020 से वर्ष 2025 के बीच 7 फीसदी की सीएजीआर (कंपाउंड एनुअल ग्रोथ रेट) की दर से आगे बढ़ने की उम्मीद है। केंद्रीय बजट 2021 में मिले सर्वाधिक आवंटन की वजह से सड़क और परिवहन क्षेत्र को गति मिली है। देश में सड़क और राजमार्गों का निर्माण किसी भी देश में हो रहे विकास को मापने का एक निरपेक्ष मानदंड है और इसी क्षेत्र की सर्वाधिक बड़ी कंपनियों में से एक है राजस्थान की कंपनी जी.आर. इंफ्राप्रोजेक्ट्स लि.। जी. आर. इंफ्राप्रोजेक्ट्स लि. भारत की अग्रणी कंस्ट्रक्शन कंपनियों में से एक है। पिछले 15 सालों के दौरान कंपनी ने भारत के 19 राज्यों में 89 प्रोजेक्ट्स पूरे किये हैं। कंपनी की इस सफल यात्रा में टाटा मोटर्स के वाहनों की अहम भूमिका रही है। जी. आर. इंफ्राप्रोजेक्ट्स के पास 900 टिपर्स, 300 रेडी मिक्स कंक्रीट (आरएमसी) मिक्सर्स, 250 वाटर टैंकर, 200 यूटिलिटी व्हीकल, 100 ट्रैक्टर ट्रेलर्स और 400 अतिरिक्त वाहन हैं।

'स्वावलंबन सशक्त' मेगा अभियान का शुभारंभ

उदयपुर (वि.)। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के प्रचार, वित्तपोषण और विकास में संलग्न प्रमुख वित्तीय संस्थान भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) ने महिला उद्यमियों के परिसंघ (सीओडबल्यूई) के साथ मिलकर 'स्वावलंबन सशक्त'- मेगा अभियान का शुभारंभ किया है।

सिडबी के उप प्रबंध निदेशक वी. सत्य वेंकटा राव ने कहा कि इस अभियान के तहत, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आरंभ की गई स्टैंड अप इंडिया (एसयूआई) योजना को बढ़ावा देने के लिए 'जागृति, पहुँच व व्यवसाय के अवसरों का सृजन' कार्यक्रम के रूप में 20 वेबिनार कार्यक्रमों की शृंखला चलाई जाएगी। बैंकों की प्रत्येक शाखा द्वारा अनुसूचित जाति (एससी) या अनुसूचित जनजाति (एसटी) के उधारकर्ताओं को विनिर्माण, सेवाओं या व्यापारिक क्षेत्र में ग्रीनफील्ड उद्यम स्थापित करने और कम से कम एक महिला उधारकर्ता को 10 लाख रूपये से 1 करोड़ रूपये तक के ऋण दिए जाने विषयक उक्त स्टैंड अप इंडिया (एसयूआई) योजना को बढ़ा दिया गया है।

माउंटेन ड्यू आईस लॉन्च

उदयपुर (वि.)। पेप्सिको इंडिया रणनीतिक तौर पर अपने बेवरेज पोर्टफोलियो का विस्तार कर रही है। इसके लिए कंपनी ने ताज़गी से भरपूर लेमन जूस पर आधारित बेवरेज माउंटेन ड्यू आइस लॉन्च किया है।

विनीत शर्मा, कैटेगरी डायरेक्टर माउंटेन ड्यू एंड स्टिंग, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि भारतीय स्वाद के हिसाब से विकसित किया गया मेड फॉर इंडिया माउंटेन ड्यू आइस बेवरेज कैटेगरी में पेप्सिको इंडिया के इनोवेशन के सफर में एक अहम पड़ाव है। पेप्सिको इंडिया की ओर से किए गए व्यापक उपभोक्ता रिसर्च में पाया गया कि भारतीय ग्राहक एक पंच के साथ लेमन फ्लेवर को काफी पसंद करते हैं और अपने लिए ऐसे बेवरेज ही चाहते हैं जिसमें लेमन यानी नींबू का असली स्वाद मिल सके। माउंटेन ड्यू आइस को लॉन्च करना महत्वपूर्ण उपलब्धि है और बेवरेज कैटेगरी इनोवेशन की दिशा में हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। माउंटेन ड्यू आइस ग्राहकों के लिए दोहरे फायदे लेकर आता है। बबल्स और फिज़ का मज़ा और जूस की खूबियां।

यूपी व हरियाणा हरिकेन रहीं विजेता

उदयपुर (वि.)। उदयपुर। वंडर सीमेंट क्रिकेट एकेडमी और गोल्ड स्पोर्ट्स के संयुक्त तत्वावधान में पैसिफिक स्पोर्ट्स

कॉम्प्लेक्स मैदान करणपुर में चल रही मेवाड़ महिला प्रीमियर लीग में सोमवार को दो मैच खेले गये। पहले मैच में यूपी रॉयल्स ने आर सी डबल्यू काठमांडू को 10 रन से तथा दूसरे मैच में हरियाणा हरिकेन ने बंगाल टाइगर्स को 5 विकेट से हराकर अपने-अपने मैच जीत लिए।

आयोजन सचिव रेणुका भारद्वाज ने बताया पहले मैच में यूपी रॉयल्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए सपना के 40 तथा आयु यादव के 22 रनों की मदद से निर्धारित 20 ओवर में 105 रन बनाए। जवाब में आर सी डबल्यू काठमांडू की टीम यूपी की कसी हुए गेंदबाजी के सामने 20 ओवर में 5 विकेट खोकर 95 रन ही बना सकी। लक्ष्मी सुद ने 29 रन बनाए। यूपी की सुनयना मिश्रा ने 2 विकेट लिए। वूमेन ऑफ द मैच सुनयना को गोल्ड स्पोर्ट्स की ममता खंडेलवाल ने प्रदान किया।

दूसरे मैच में बंगाल टाइगर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 8 विकेट खोकर 115 रन बनाए। तनुजा सरकार ने 27 व मरजीना ने 26 रन बनाए। नेहा, प्रीति, गुलशन व प्रीत ने 2-2 विकेट लिए। जवाब में हरियाणा हरिकेन ने 5 विकेट खोकर मैच जीत लिया। नेहा शर्मा ने नाबाद 58 रन तथा नेहा कौशिक ने 17 रन बनाए। वूमेन ऑफ द मैच नेहा शर्मा को गोल्ड स्पोर्ट्स कि ऐश्वर्या सोनी ने पुरस्कार प्रदान किया।

ज़िंक ने भारत का पहला अंडरग्राउंड फर्स्ट एड स्टेशन स्थापित किया

उदयपुर (वि.)। हिन्दुस्तान ज़िंक ने अपनी रामपुरा अगुचा खदान में भारत का पहला अंडरग्राउंड फर्स्ट एड एवं ऐम्बुलेंस

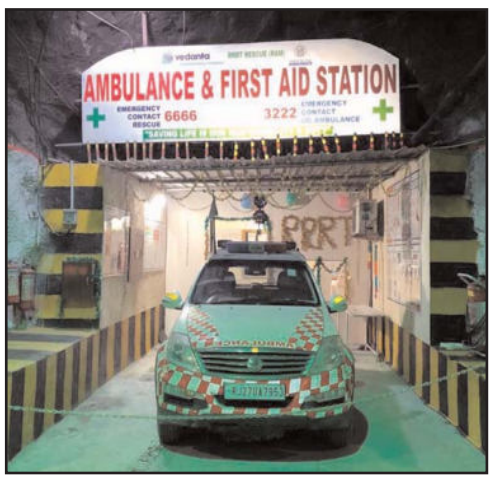

सेंटर स्थापित किया है। यह अंडरग्राउंड फर्स्ट एड एवं ऐम्बुलेंस सेंटर फ्रेश एयर बेस से युक्त है जिसे विशेषतौर पर जमीन के भीतर स्थित खदान के लिए बनाया गया है। यहां एक बचाव दल तैनात किया गया है जिसकी अगुआई के लिए योग्य चिकित्सा पेशेवर एवं बचाव प्रमुख की नियुक्ति की गई है।

अपनी किस्म की यह पहली ज़मीन के भीतर स्थित बचाव एवं उपचार व्यवस्था 24 घंटे कार्यरत रहेगी। यहां पर समर्पित बचाव एवं पैरामेडिकल स्टाफ की तैनाती रहेगी। इस अंडरग्राउंड माइन स्टेशन में एक समर्पित आपातस्थिति वाहन भी है जो एईडी, ईसीजी और रिवाइविंग अपैरेटस से युक्त है। इस स्टेशन में आराम के लिए वातानुकूलित सुविधा भी है और साथ में पोर्टेबल ऑक्सीजन सिलेंडर व सैलाइन बोतलें, बीपी मॉनिटरिंग इंस्ट्रूमेंट, डिहाइड्रेशन मैज़रिंग इंस्ट्रूमेंट व पल्स ऑक्सीमीटर भी हैं जिन्हें आपातस्थिति में इस्तेमाल किया जा सकता है।

बुनकर वरिष्ठ सहायक पद पर पदोन्नत

उदयपुर (वि.)। सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग जयपुर द्वारा एक आदेश जारी कर सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय उदयपुर के कनिष्ठ सहायक वीरालाल बुनकर को वरिष्ठ सहायक पद पर पदोन्नत किया गया। कार्यभार संभालने पर उपनिदेशक डॉ. कमलेश शर्मा, जनसम्पर्क अधिकारी विपुल शर्मा सहित स्टाफ सदस्यों ने बुनकर को बधाई दी।

धींग पुरस्कार घोषित

साहित्यिक संस्था युगधारा के अंतर्गत दिये जाने वाले वर्ष 2020 के धींग पुरस्कारों में कन्हैयालाल धींग राजस्थानी पुरस्कार शिवदानसिंह जोलावास एवं उमरावदेवी धींग साहित्योदय पुरस्कार महेन्द्रकुमार साहू को तथा वर्ष 2019 के लिए क्रमशः हिम्मतसिंह उज्ज्वल एवं विजय मारु को प्रदान किया जाएगा। प्रत्येक पुरस्कार के अंतर्गत सम्मानपत्र, सम्मानराशि, मेवाड़ी पाग, शॉल, मुक्ताहार, श्रीफल और साहित्य प्रदान किया जाता है।

- सुरेशचन्द्र धींग

विपुल शर्मा ने पीआरओ का पद संभाला

उदयपुर (वि.)। सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा नवपदस्थापित जनसम्पर्क अधिकारी विपुल शर्मा ने 5 फरवरी को सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय उदयपुर में पदभार ग्रहण कर लिया। उपनिदेशक डॉ. कमलेश शर्मा ने नवनियुक्त पीआरओ को कार्यभार ग्रहण करवाते हुए पगड़ी पहनाकर अभिनंदन किया और विभाग की कार्यप्रणाली से अवगत कराया।

संकल्प की नई पहल शुरू

उदयपुर (वि.)। जिला कौशल प्रशासन और जिला कौशल समितियों (डीएससी) को मजबूत करने के लिए, कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय फैलोशिप कार्यक्रम के राष्ट्रीय लॉन्च की घोषणा की। यह विश्व बैंक ऋण सहायता कार्यक्रम (आजीविका संवर्धन के लिए कौशल अधिग्रहण और ज्ञान जागरूकता) संकल्प के तहत एक कार्यक्रम है जो जिला कौशल प्रशासन और जिला कौशल समितियों (डीएससी) को और मजबूत करेगा। केंद्रीय कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्री डॉ. महेन्द्रनाथ पाण्डेय ने कहा कि पिछले 6 वर्षों से कौशल भारत ने बड़े पैमाने पर क्षमता निर्माण और पूरे देश में व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए बुनियादी ढाँचा बनाने पर ध्यान केंद्रित किया है। कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय के सचिव प्रवीण कुमार ने कहा कि शुरू किए गए सभी कार्यक्रम अपने कौशल विकास और प्रशिक्षण आउटरीच में जिला कौशल समितियों का समर्थन करने के लिए जमीनी स्तर पर संसाधनों की गुणवत्ता और उपलब्धता को मजबूत करने के हमारे फोकस के साथ जुड़े हैं।

'2 मिनट ऑनलाइन हेल्थ इंश्योरेंस' लॉन्च

उदयपुर (वि.)। नवी जनरल इंश्योरेंस ने '2 मिनट' ऑनलाइन खुदरा स्वास्थ्य बीमा उत्पाद लॉन्च किया है। ग्राहक नवी हेल्थ इंश्योरेंस ऐप के द्वारा तेज और पेपरलेस प्रक्रिया द्वारा सिर्फ 2 मिनट में स्वास्थ्य बीमा उत्पाद खरीद सकते हैं। ऐप पर ही तत्काल पॉलिसी भी जारी हो जाती है।

नवी जनरल इंश्योरेंस के एमडी एवं सीईओ रामचंद्र पंडित ने कहा कि इस उत्पाद के तहत लोगों के लिए व्यक्तिगत या पूरे परिवार के लिए कस्टमाइज किए जा सकने लायक 2 लाख रुपये से 1 करोड़ रुपये तक के स्वास्थ्य बीमा उत्पाद जारी किए जाते हैं। हेल्पलाइन द्वारा फोन पर क्लेम प्रक्रिया शुरू की जा सकती है और ज्यादातर कैशलेस क्लेम 20 मिनट के भीतर मंजूर कर दिए जाते हैं. नवी हेल्थ इंश्योरेंस 98 फीसदी के क्लेम सेटलमेंट रेश्यो के साथ इस इंडस्ट्री की अगुआ कंपनियों में से है और देशभर के 400 से ज्यादा स्थानों पर इसके 10 हजार से ज्यादा अस्पतालों का नेटवर्क है. ग्राहक नवी हेल्थ इंश्योरेंस ऐप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड कर सकते हैं। इसके स्वाथ्य बीमा में इन पेशेंट हॉस्पिटलाइजेशन, अस्पताल में भर्ती होने से पहले और बाद का खर्च, कोविड-19 के तहत अस्पताल में भर्ती होने का खर्च, डॉमिसिलियरी हॉस्पिटलाइजेशन, 393 डे केयर प्रोसीजर, रोड एम्बुलेंस कवर, वेक्टर बॉर्न डिजीज कवर, ऑप्शनल क्रिटिकल इलनेस कवर, मैटर्निटी और नवजात शिशु कवर शामिल है।

परिवर्तन प्रोग्राम के प्रभाव की रिपोर्ट जारी

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी बैंक ने राजस्थान के लिए परिवर्तन इम्पेक्ट रिपोर्ट जारी की। यह परिवर्तन इम्पेक्ट रिपोर्ट बैंक

द्वारा राजस्थान में अपने कॉरपोरेट सोश्यल रेस्पोन्सबिलिटी प्रोग्राम के तहत किए गए जनकल्याण कार्यों को दर्शाती है। एचडीएफसी बैंक परिवर्तन बैंक की एक सामाजिक भागीदारी पहल है जिसे बैंक ने अपनाया है और राजस्थान के 13 जिलों, 117 गांवों में अपना कर यहा रहने वाले 3.3 मिलियन से भी अधिक लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला दिया है।

परिवर्तन इम्पेक्ट रिपोर्ट फॉर राजस्थान को एचडीएफसी बैंक के ब्रांच बैंकिंग हैड प्रतीक शर्मा और सीएसआर स्टेट हैड मिस अपर्णा कुमारी ने जारी किया। इस मौके पर सत्येन मोदी वीपी जोनल हैड राजस्थान, प्रियांक विजय वीपी सर्किल हैड राजस्थान, बैंक के अनेक वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। कॉरपोरेट सोश्यल रेस्पोन्सबलेटी हेड नुसरत पठान ने कहा कि परिवर्तन स्टेट रिपोर्ट जारी कर खुशी हो रही है।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908, IFSC no.
UCBA0001845,
a/c type- Current a/c

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

शब्द रंजन की साहित्यिक चौपाल के शुभेच्छुओं से साभार प्राप्त

निहाल अजमेरा, भीलवाड़ा,	500/- रूपये
महिपालसिंह,	500/- रूपये
बनवारीदत्त जोशी, पुणे	500/- रूपये
दिनेश रावत, हरिद्वार	500/- रूपये
कन्हैयालाल सुरेशचन्द्र, पो. बम्बोरा	1000/- रूपये
अज्ञात	500/- रूपये

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (6)

- देवीलाल सामर -

औरतें केवल लाज ढकने को कुछ कपड़ा लपेटती थीं। भूखे पेट कभी नहीं सोते थे। औरतें कई प्रकार की वेणियां बांधती थीं। दिन-रात मस्ती में रहते थे। घरों के दरवाजे केवल घासफूस एवं बांसों के होते थे। कोई शहरी व्यक्ति उनकी स्त्रियों को बुरी निगाह से देख लेता तो लोग उसकी आंख फोड़ देते थे। परन्तु जब 7 वर्ष के बाद मैं गया तो भूखमरी और बीमारियां बढ़गई। औरतें चोलियां पहिनने लगीं परन्तु उनमें वासना बढ़ गई। छल कपट बढ़गया।

शराब के दौर चल रहे थे। चूंकि वे आदिवासियों के नेता समझे जाते थे अत: फिल्म के सभी कार्यों में इन भोलेभाले आदिवासियों को सम्बन्धित करने का सम्पूर्ण काम उनका था। इस कार्य में रूपयों की नदियां बहाई जा रही थी। फिल्म की नायिका और नायक भी मड़िया जाति के ही थे। उनको लाने का समस्त श्रेय भी इन्हीं नेता महोदय का था। वे दोनों डाकबंगले के पास के मकानों में रहते थे।

मैंने धीरे-धीरे उनसे मित्रता स्थापित की। मैंने पता लगाया कि उन्हें प्रति शूटिंग में जितना धन दिया जाता है उसका अधिकांश नेताजी की जेबों में जाता था। नायक-नायिका को बढ़िया से बढ़िया विदेशी शराब पिलाई जाती थी। बढ़िया से बढ़िया कपड़े पहिनने को दिये जाते थे।

इस फिल्म में सैकड़ों आदिवासी प्रयुक्त किये गये थे। उन्हें लाने का सम्पूर्ण ठेका नेताजी ने ले रखा था। मैंने एक दिन नेताजी से सीधा प्रश्न किया तो वे अपने को इस फिल्म से किसी तरह से सम्बन्धित होने से इन्कार करते रहे। नेताजी को यह नहीं मालूम था कि मैं प्रतिदिन उनकी अवांछित हरकतों को किंवाड़ की दरारों से देखा करता हूं।

मैंने फिल्म के नायक एवं नायिका से सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। वे विशुद्ध आदिवासी थे। ऊपर से भले ही उन्हें यह जीवन जीना पड़ रहा था परन्तु अंतस में वे उसे पसंद नहीं करते थे। यदि वे अपनी अनिच्छा प्रकट करते तो नेताजी के रोष का भागीदार उन्हें बनना पड़ता।

मुझे उनसे फिल्म सम्बन्धी अनेक रहस्यों का पता लगगया। प्रति सप्ताह खींची हुई फिल्मों का एक लोट विशिष्ट वाहन द्वारा बम्बई भेजा जाता था और वहीं से हवाई जहाज द्वारा उसे प्रोसेसिंग के लिए लंदन भेजा जाता था जो एक सप्ताह में लौटकर पुन: नारायणपुर आ जाती थी और उसे इन आदिवासियों को इसी पास वाले कमरे में दिखलाई जाती थी।

पास ही के एक जंगल में जो नकली घोटूल बनाई गई थी उसका भी मुझे पता लग गया। घोटूल समस्त विश्व के आदिवासियों का वह स्थल है जहां आदिम नौजवान और नवयुवतियां अपना रात्रि निवास करते हैं। उस घोटूल का देवता लिगोपन देव होता है जो इनकी विवाह पूर्व की मैथुन क्रियाओं के फलस्वरूप गर्भ धारण से बचाता है। प्रत्येक आदिवासी युवक-युवती का इस घोटूल में रहना धार्मिक कर्तव्य के समान होता है। इस घोटूल जीवन में उन्हें अपना जोड़ा व्यवस्थानुसार बदलना पड़ता है।

घोटूल जीवन नये मिथुन क्रिया का आदिम जीवन का विशिष्ट अंग होता है। उसके बिना उनके देवता उनसे अप्रसन्न रहते हैं और अनेक संकटों की आशंका रहती है। घोटूल जीवन गांव के सामाजिक जीवन का भी एक केन्द्र होता है जिसके माध्यम से युवक-युवतियां अनेक

तेरातली नृत्य प्रस्तुत करतीं शकुंतला पंवार और राधादेवी

सामाजिक सेवा-कार्यों में संलग्न रहते हैं। सही मायने में यह घोटूल जीवन ही उनका वास्तविक वैवाहिक जीवन होता है। घोटूल जीवन के बाद उनके विवाह होते हैं। घोटूल के अपने साथियों के साथ नहीं, अन्यत्र कहीं। वे औपचारिक मात्र होते हैं और केवल अपनी वंश वृद्धि के लिए।

इस फिल्म के लिए जो नकली घोटूल बनाया गया था वह हर मायने में नकली था। जिन नव युवक-नवयुवतियों को फिल्म कार्य के लिए लाया जाता था वह कोई आसान कार्य नहीं था। नेताजी को हजारों रूपयों का प्रलोभन देकर यह कार्य करना पड़ता था। इसके पीछे कई बार फिल्मवालों को आदिवासियों के विद्रोह का सामना भी करना पड़ता था।

मेरी जानकारी जब परिपक्व हुई तो मैं सीधा रायपुर आया जहां उस संभाग के कमिश्नर रहते थे। मैंने इस चित्र का समस्त रहस्य उनके सामने उद्घाटित किया। पहले तो उन्हें विश्वास नहीं हुआ और मुझे यह कहा कि इन्हें पंडित नेहरू का परवाना मिला हुआ है, आप व्यर्थ ही इसमें हाथ नहीं डालें। श्री कमिश्नर महोदय भी बड़े राष्ट्रीय विचारों के व्यक्ति थे। ऊपर से भले ही उन्होंने मुझे यह बात कही हो परन्तु अन्दर से वे पूर्णत: मेरे साथ थे।

वे मेरे साथ नारायणपुर आये और मैंने उन्हें किंवाड़ की दरार के सहारे सभी बातें प्रत्यक्ष करादीं। उसके बाद तो शासकीय सूत्रों से अन्य सभी बातें परिपुष्ट होगईं। उन्होंने भारत सरकार से सम्पर्क किया और एक ही सप्ताह में उस फिल्म का कार्य बन्द करवा दिया।

मुझे फिल्म वाले कातिलाना दृष्टि से देखने लगे और आदिवासियों को मेरे खिलाफ भड़काने के उन्होंने भरपूर प्रयत्न किये परन्तु वे कारगर नहीं हुए। मैं जानता था, नेताजी अपने हथकंडे काम में लेंगे और मुझे इस क्षेत्र से जिन्दा नहीं छोड़ेंगे। मैंने राज्य सरकार से संरक्षण चाहा और वह मुझे मिल भी गया। हम अपना कार्य तो पहले ही खत्म कर चुके थे अत: पुलिस संरक्षण में हमने सरगूजा की तरफ प्रस्थान कर दिया।

आदिम क्षेत्रों के सर्वेक्षण के मेरे सैकड़ों संस्मरण हैं परन्तु उन्हें विस्तार देने का मोह मुझे छोड़ना ही पड़ेगा। इस कार्य में हम पूरे छह माह तक संलग्न रहे। इसकी जो फिल्म हमने तैयार की उसकी एक प्रति राज्य सरकार को और एक प्रति भारत सरकार को भी भेज दी गई। सर्वेक्षण रिपोर्ट की भी तीन प्रतियां तैयार की गई। एक हमारे पास रही। एक राज्य सरकार के पास और एक भारत सरकार को प्रेषित की गई।

भारतीय आदिम संस्कृति के सर्वेक्षण का कार्य अपनेआप में अनूठा था क्योंकि अब तक आर्थिक एवं सामाजिक सर्वेक्षण की कल्पना तो व्यवहार में आई परन्तु सांस्कृतिक सर्वेक्षण का व्यावहारिक रूप कदाचित पहलीबार भारतीय लोककला मण्डल द्वारा ही किया गया। यह कार्य इतना आकर्षक एवं सफल माना गया कि भारत सरकार ने हमें मणिपुर, त्रिपुरा एवं राजस्थान के सर्वेक्षण का काम भी सौंपा। प्रत्येक राज्य के सर्वेक्षण, फिल्मीकरण एवं सांस्कृतिक सामग्री संकलन आदि में हमें लगभग एक वर्ष लगा।

तत्सम्बन्धी फिल्में तथा हमारे द्वारा निकाले गये निष्कर्ष निश्चय ही उपादेय सिद्ध हुए। उससे हमारे सामाजिक कार्यकर्ताओं की दृष्टि भी मुखरित हुई। उसके कुछ उदाहरण मेरे पास अवश्य हैं। राजस्थान के जो आदिम नेता मुझसे तथा मेरे काम से नाराज थे, वे मेरे अनुकूल बने। उसके बाद तो 'कुदरत के लाड़ले' नामक जो फिल्म हमने भीली जीवन सम्बन्धी बनाई

उसमें मुझे उनका सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। भीली क्षेत्रों में जो पहले वेश-विन्यास अलंकरण आदि बदरंग बनाने एवं नाचगान को बुरा समझने की जो लहर चल पड़ी थी उसमें अवश्य ही शिथिलता आई और उनके जीवन की इन रंगीनियों को समर्थन मिलता रहा। यह बात दूसरी है कि हमारे देश की अन्य प्रवृत्तियों, विचारधाराओं एवं राजनैतिक ऊहापोह के कारण ये जातियां अधिक से अधिक बदरंग होती गई और आज वे अपनी रंगीनियों को खोकर अपनी वर्तमान आर्थिक दुर्दशा के कारण अत्यधिक संतप्त जीवन जी रही है।

मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक सर्वेक्षण एवं फिल्मीकरण के ठीक 7 वर्ष बाद मैं पुन: बस्तर क्षेत्र में यह देखने को गया कि वे रंगीनियां आज भी शेष हैं या नहीं, और जो कुछ भी मैंने देखा उनसे मेरी आंखें अनायास ही रो पड़ीं। बिना अधिक व्याख्या किये मैं जो निष्कर्ष नीचे दे रहा हूं उससे पाठकों को लगेगा कि मैं बेमतलब की निरर्थक बात कर रहा हूं परन्तु तार्किक दृष्टि से उनकी गहराई में उतरने से मेरे निष्कर्ष निश्चित ही सत्याधारित सिद्ध होंगे।

मैं पहले जिन क्षेत्रों में गया था वहां कोई स्कूल, अस्पताल नहीं था। न सामुदायिक विकास ही का कार्य शुरू हुआ था। लोग साधारण झोंपड़ियों में रहते थे। विशेष कपड़ा नहीं पहिनते थे। औरतें केवल लाज ढकने को कुछ कपड़ा लपेटती थीं। उनके स्तन खुले ही रहते थे। खेतीबाड़ी भी वे नहीं जानते थे परन्तु वे कभी बीमार नहीं होते थे।

कभी झूठ नहीं बालते थे। उनका व्यवहार अत्यन्त सौहार्द्रपूर्ण था। भूखे पेट व कभी नहीं सोते थे। नंगे रहते थे परन्तु अन्य सामग्रियों से अपनेआप को अत्यन्त कलात्मक ढंग से सजाते थे। औरतें कई प्रकार की वेणियां बांधती थीं।

दिन-रात मस्ती में रहते थे। किसी के बीच वैमनस्य भाव नहीं था। घरों में ताला लगाया ही नहीं जा सकता था क्योंकि उनके दरवाजे केवल घासफूस एवं बांसों के होते थे। कहीं कोई दुर्व्यसन की बात सोच नहीं सकता था। यदि कोई शहरी व्यक्ति उनकी स्त्रियों को बुरी निगाह से देख लेता तो लोग उसकी आंख फोड़ देते थे। औरतें नग्नावस्था में रहने के बावजूद भी किसी की उन पर बुरी निगाह नहीं पड़ सकती थी।

परन्तु जब 7 वर्ष के बाद मैं गया तो उनके पक्के घर बन गए। उन पर ताले भी लगगये परन्तु चोरियों की भरमार हो गई। उन्हें खेती करना भी सिखा दिया गया परन्तु भूखमरी और अधिक बढ़गई। अस्पताल भी वहां खुलगये परन्तु बीमारियां बढ़गई। स्त्री रोगों की तो वहां कल्पना ही नहीं की जा सकती थी परन्तु आज उनका बाहुल्य होगया।

उन्होंने अपने अर्धनग्न शरीर को कपड़ों से ढक भी लिया परन्तु उनकी रंगीनियां नष्ट होगई। औरतें चोलियां पहिनने लगी परन्तु उनमें वासना बढ़ गई। स्कूल भी खुल गये परन्तु लोगों में उच्छृंखलता बढ़ गई। छल कपट बढ़गया। उनके पारम्परिक गीतों को जंगली असाहित्यिक समझकर उन्हें आश्रय भजनावली के गीतों से रिप्लेस कर दिया परन्तु उनसे उनकी अरूचि हो गई।

-क्रमश :

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।